BHDE-101/EHD-01

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2018 एवं जनवरी 2019 सत्रों के लिए)

हिंदी गद्य
पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई–101/ई.एच.डी–01
हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य (2018–19)

पाठ्यक्रम : बी.डी.पी/बी.एच.डी.ई–101/ई.एच.डी–01/टी.एम.ए/2018–19

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2018 सत्र के लिए	:	**31 मार्च 2019**
जनवरी 2019 सत्र के लिए	:	**30 सितंबर 2019**

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखने हैं तथा लघु प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों में देने हैं। इसके अलावा तीसरी श्रेणी के प्रश्न हैं जिनमें दिए गए शीर्षक पर 300 शब्दों में टिप्पणी लिखनी है।

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

घ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम
हिंदी गद्य
सत्रीय कार्य – 2018-19
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बीएचडीई-101/ईएचडी-01
सत्रीय कार्य कोडः बीएचडीई-101/ईएचडी-01/टीएमए/2018-19
कुल अंक-100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3=30

क) राज्य में हाहाकार मचा हुआ था। प्रजा दिन-दहाड़े लुटी जाती थी। कोई फरियाद सुनने वाला न था। देहातों की सारी दौलत लखनऊ में खिंची आती थी और वह वेश्याओं में, भाँडों में और विलासिता के अन्य अंगों की पूर्ति में उड़ जाती थी। अंग्रेजी कम्पनी का ऋण दिन-दिन बढ़ता जाता था। कमली दिन-दिन भीगकर भारी होती जाती थी। देश में सुव्यवस्था न होने के कारण वार्षिक कर भी न वसूल होता था। रेजीडेंट बार-बार चेतावनी देता था, पर यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे, किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी।

ख) मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेट कर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही बोला – ''बबुआजी! अब नहीं कान पकड़ता हूँ, अब नहीं। ... मोहर छाप वाली धोती लेकर क्या करूंगा? कौन पहनेगा? ... ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ। बबुआजी, मेरी घर वाली जिन्दा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूंगा। ... गांव भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी। अब क्या?'' मैं चुपचाप वापस लौट आया। समझ गए, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह नहीं आ सकता।

ग) निर्मला तो सन्नाटे में आ गई! मालूम हुआ, किसी ने उसकी देह पर अंगारे डाल दिये। मुंशीजी ने डाँटकर जियाराम को चुप करना चाहा, जियाराम निःशंक खड़ा ईंट का जवाब पत्थर से देता रहा। यहाँ तक कि निर्मला को भी उस पर क्रोध आ गया। यह कल का छोकरा, किसी काम का न काज का, यों खड़ा टर्रा रहा है; जैसे घर भर का पालन-पोषण यही करता हो। त्योरियाँ चढ़ाकर बोली– बस, अब बहुत हुआ जियाराम! मालूम हो गया, तुम बड़े लायक हो, बाहर जाकर बैठो।

घ) बार-बार राजनीति! प्रत्येक प्रश्न में राजनीति! राज्य का समाहर्त्ता राज्य के महामंत्री से राजनीति के रहस्य नहीं कहना चाहता? और आसव-पान करने में भी तुम्हारी राजनीति है! हाँ, तुम्हारी नहीं, मेरी है। समाहर्त्ता! यदि तुम नहीं चाहते तो मैं तुमसे राजनीति के रहस्य खोलने के लिए नहीं कहूँगा। कविता की बातें कहूँगा। कविता की बातें कर सकते हो? उत्तर दो, जो आसव वन्य कुसुमों की सुगंधि लिए हुए है, वह इतना मादक क्यों होता है?

ङ) और तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चय हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं, परन्तु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15X4=60

क) नाटक विधा का परिचय देते हुए इसके विभिन्न तत्वों पर प्रकाश डालिए।
ख) 'शरणदाता' की कथावस्तु का विश्लेषण अपने शब्दों में कीजिए।
ग) निर्मला के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।
घ) 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए।
ङ) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के कथानक का विश्लेषण कीजिए।
च) 'सिंध में सत्रह महीने' निबंध के भाव पक्ष और विचार पक्ष का मूल्यांकन कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए : 5X2=10

क) रेखाचित्र और संस्मरण
ख) लहना सिंह का चरित्र-चित्रण
ग) 'कौमुदी महोत्सव' के आधार पर चाणक्य का व्यक्तित्व
घ) प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास
ङ) निर्मला की कथावस्तु
च) 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' का प्रतिपाद्य